मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10

MTT-041

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2023
एम.टी.टी.-041 : सिंधी-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के सामने अंक दिए गए हैं।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250-300** शब्दों में दीजिए : 15×2=30

   (i) सिंधी-हिंदी भाषाओं की वर्तनी का परिचय देते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर तुलना कीजिए।

   (ii) 'सिंधी-हिंदी भाषाओं की पदरचना का अनुवाद' विषय पर टिप्पणी लिखिए।

   (iii) सिंधी-हिंदी भाषाओं की वाक्य-रचना की समानताओं और अनुवाद की दृष्टि से उन पर विचार कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) अढूणो

(ii) कूड़णु

(iii) ग्राड़णु

(iv) छोहु

(v) टिकुंडो

(vi) ताड़ी

(vii) नायाबु

(viii) बेवाहु

(ix) मानु

(x) लियाक़त

3. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) ठगी

(ii) बुद्धिमता

(iii) आवश्यकता

(iv) पचपन

(v) उद्दश्य

(vi) मार्गदर्शक

(vii) राक्षस

(viii) प्रथा

(ix) झुलाना

(x) प्रस्तावना

4. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** कहावतों/मुहावरों का सिंधी से हिंदी/हिंदी से सिंधी में अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 10

(i) अकुल जो दुश्मन

(ii) आदुर करणु

(iii) पारि लगाइणु

(iv) ग़रीब जी जोइ जग जी भाजाई

(v) घर जो भेदी लंका लुटाए

(vi) गधे खा खिलाया पान न पुन

(vii) कल किसने देखा

(viii) दाम करावे काम

(ix) जहाँ फूल वहाँ काँटा

(x) दिन को तारे दिखाना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) असां जो ख़ास डि॒णु चेटी चंडु आहे।

(ii) महिरबानी करे थोरो इंतज़ार करियो।

(iii) सिंधी बो॒ली घणी सवली आहे।

(iv) जेकड॒हिं मां का नि ग॒लतो करियां त मूंखे बु॒धाइजो।

(v) तव्हीं दिल्लीअ में कहिड़े इलाइके में रहंदा आहियो ?

(vi) मूंखे सूफ़ु ख़रीद करिणो आहे।

(vii) हीउ महांगो किताबु आहे।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) सचल सरमस्त पूरा नाम लिखिए।

(ii) शाह लतोफ की शायरी किस भाषा में है ?

(iii) इस सभ्यता का विकास सिंधु नदी के किनारे पर हुआ।

(iv) भक्ति काव्यधारा के मुख्य संत कवि हैं—सामी।

(v) सूफी कवियों में सिरमोर कवि शाह लतीफ हैं।

(vi) आप किस प्रांत में पढ़ाई करते हैं ?

(vii) मेरा यह अनुरोध है कि मेरा तबादला कर दें।

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) हुन खे उहो हंधु याद ईंदो हो जिते हू लग़ड़ उड़ाईंदो हो ऐं जिते हू जड़हिं बि चाहींदो हो, उते वञी सनान कंदो हो। माउ जी बि याद ईंदी हुअसि। हुन जी सारी ताक़त ई जणु ग़ाइब थी वेई हुई। हींअर स्कूल में हुन खां वधीक कमज़ोर कोबि शार्गिद न हो। जड़हिं बि उस्ताद हुन खां को सुवाल पुछंदो हो त हू बुधाए न सघंदो हो ऐं चुप चाप मास्तर जी मार खाईंदो रहंदो हो। बिया बार रांदियूं कंदा हुआ त हू उन्हनि खां बि अलगि थी घरनि जी छितियनि खे डिसंदो रहंदो हो।

हिक डोंहुं हुन हिमथ करे पंहिंजे मामे खां पुछियो, "मां कड़हिं घरि वेंदुसि ?"

मामे जवाबु डिनुसि, "मोकलुनि में हलंदासीं।"

मोकलुनि में त अञा घणा डोंहं पिया हुआ, इनकरे इन्तजारु करण खां सवाइ बियो को रस्तो न हो।

इन विचमें हिक डोंहं हुन खां संदसि किताब गुम थी वियो। हींअर हू पंहिंजो सबकु यादि न पिए करे सघियो। हररोज़ हुन जो उस्तादु खेसि बेरहमीअ सां मारींदो हो। हुन जी हालत अहिड़ी खराब थी वेई जो संदसि मामे जा पुट बि खेसि पंहिंजो भाउ चवण में शर्माईंदा हुआ।

हू मामीअ वटि आयो ऐं चवण लगो, "मां स्कूल न वेंदुसि, मुंहिंजो किताब गुम थी वियो आहे।"

मामीअ कावड़ि में जवाबु डिनुसि, "मां तो लाइ महिने में पंज दफ़ा किताब किथां आणियां ?"

हुन जे मथे में सूर थी पियो। हू सोचण लगो, मलेरिया थी पवंदी। पर सभ खां वडो गाल्हि इहा हुई त बीमारु थी पवण खांपोइ हू घर वारनि लाइ मुसीबत थी पवंदो।

(ख) मूं हुनजे मथे ते हथु रखियो। महिसूसु थियो त हुनखे मां वर्हीनि खां पोइ थो डिसां। हूअ कोमल गुडो कोन्हें ऐं न ई फ्राक ऐं चोलीअ वारी खिलन्दड़ कुडन्दड़ परी आहे। अरे ! हूअ त हड्डियुनि मथां मामूली गोश्त जो तहु आहे, जंहिंखे झुरड़ियुनि वारी चमड़ीअ ढके लिकाए छडियो आहे ..... उमिरि में मुंहिंजी भेण 'दादी' पिए लगो।

चहिरे जे घुंजनि हुनजी सजो नाज़कता खसे वरिती हुई। गुलाबी सूंहं खे कारहिं ढके छड्डियो आहे। अखियुनि हेठां कारा धुबा साफ़ पिए डिसण में आया। डन्दनि बिना गिल पोला थी पिया हुअसि। जणु सुकल दुबणि मंझि ऊन्हियूं खडूं। खिंचाव बिना देहि ढिली थी हुअसि। मन सां गडोगडि तन बि भुरिजी पियो होसि।

नारीअ जो पीड़ियलु, जीअरो जागन्दो, हलन्दड़ चलन्दड़ कंकाल मुंहिंजे साम्हूं हो। ज़ाहिरु हो त अशोक मर्द ज़ाति खे गन्दी गारि डेई गन्दीगीअ जे ग़र्त में उछिलायो हो।

कुसुम जी अहिड़ी हालति डिसी कुझु खिन्न मां सुनि में अची वियुसि। जीअं तीअं पाणु सम्भाले चयोमांसि, "पुट ! बुधो आहे त अशोक नौकिरी छडे डिनी।"

"नौकिरीअ खां जवाबु मिलियुसि.... कोई कमु ई न कन्दो त केतिरो कोई डोंदो रहन्दो ?"

डिठुमि त हुन में शक्ती अची वेई। रुअन्दे मन तां कझु बोझु बि हल्को थियो होसि। सभ खां वडो गाल्हि इहा डिठमि त डुखनि हुनखे विद्रोही करे

छड़ियो हो। विद्रोह जी भावना हुनजे मन जे 'कमज़ोरीअ' खे भज़ाए, अन्दर में कुव्वत पैदा कई हुई। वक्तु अचण ते अहिड़ी हिम्मथ वारी संओं कदमु ई खणन्दी।

8. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) तिलक सिंधी हाईस्कूल पुराने सक्खर से चार-पाँच किलोमीटर दूर था। हेमू का घर पुराने सक्खर में था। घर से हेमू प्रतिदिन दौड़ते हुए या साइकिल पर स्कूल जाता था। तिलक सकूल 1913 ई. में स्थापित हुआ था। उसका प्रबंधन देव समाज द्वारा होता था। तिलक स्कूल के ही अध्यापक ख़ानचंद ने देव समाज नाम से सक्खर में स्कूल प्रारंभ किया था। मास्टर ख़ानचंद हेमू के व्यवहार से बेहद खुश और प्रभावित थे। देव समाज के कार्यक्रमों में भी हेमू को बुलवाते थे। हेमू दोस्तों का सच्चा दोस्त, हमदर्द, विद्यार्थियों और अध्यापकों का दुलारा था। दोनों स्कूलों में हेमू का नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता था।

हेतू को पुस्तकें पढ़ने का भी बेहद शौक था। स्कूल में मास्टर ख़ानचंद हेमू को पढ़ाने के लिए श्रेष्ठ, धार्मिक और देशभक्ति से भरपूर पुस्तकें देते थे और किताबें चुनने में भी सहायता करते थे।

गांधीजी ने कहा था, 'पुस्तकों का मूल्य हीरों-जवाहरातों से भी अधिक है। हीरों में बाहरी चमक होती है, परंतु किताबें अंतर्रात्मा को रोशन करती हैं। जिस घर में किताबें नहीं हैं, वह घर नहीं पर श्मशान है।' हेमू ने यह बात मन में समा रखी थी। वह ऐतिहासिक, धार्मिक और वीर सपूतों की पुस्तकों का अभ्यासी था।

(ख) वस्तुतः आज वनों और गोचर भूमि की जैव-विविधता तो नष्ट हुई ही है साथ ही अनेक क्षेत्रों में घास-फूस भी नहीं है। इसलिये वनों में ही वन्य प्राणियों की खाद्य शृंखला समाप्त होती जा रही है। वहाँ भी विविध प्रकार की घास और पशुओं के चरने योग्य अन्य वनस्पतियों को लगाना परम आवश्यक है। गाय, भेड़, बकरियों और अन्य प्राणियों (जैसे खरगोश, हिरण व नीलगाय आदि)

के चरने योग्य वनस्पतियों को व्यापक स्तर पर विकसित करना होगा। वनों में इन जीवों के लिये चारा, आहार और जल की खोज में हाथी, भालू, शेर, तेंदुए, चीते एवं नीलगाय आदि सभी आबादी वाले क्षेत्रों में आने को विवश हैं। पर्वतीय क्षेत्रों से वनस्पति विनाश के बाद वहाँ तो मिट्टो का कटाव हो जाने के बाद घास का उगना भी कठिन हो जाता है। इसलिए वनों में भी उचित संयोजन (Proper combination) में घास, तृण, अन्य पादप, क्षुप, लताएँ और वृक्ष विकसित करने की आवश्यकता है।